रातों-रात दिवालिया

सैर-सपाटे के लिए विदेश गए कई ब्रिटिश नागरिकों को सोमवार की सुबह यह जानकर जबर्दस्त धक्का लगा कि उनका रिटर्न टिकट जिस एयरलाइंस का था, वह रातोंरात दिवालिया हो गई। यह हादसा मोनार्क एयरलाइंस के साथ हुआ जो दिवालिया होने से ठीक पहले तक ब्रिटेन की सबसे बड़ी एयरलाइंस कंपनियों में से एक थी। खैर, थोड़ी ही देर बाद ब्रिटिश हुकूमत की तरफ से यह घोषणा भी हुई कि बाहर फंसे ब्रिटिश नागरिक घबराएं नहीं। उन्हें अपनी जगह पर एक-दो हफ्ते और रुके रहने का इंतजाम करना पड़ेगा, तब तक उनकी ब्रिटेन वापसी का सरकारी इंतजाम हो जाएगा। बाहर फंसे यात्रियों की तादाद का अनुमान लगभग 1 लाख 10 हजार लगाया गया है। उनकी वापसी के लिए ब्रिटेन सरकार 17 एयरलाइंस के 34 जहाजों की 700 चार्टर्ड उड़ानों की व्यवस्था कर रही है। यह इंतजाम स्पेन जैसे बड़े टूरिस्ट डेस्टिनेशंस के लिए कारगर हो सकता है लेकिन मोनार्क एयरलाइंस के टिकटधारी जहां कम तादाद में होंगे, वहां चिंता के मारे वे अपनी छुट्टियों का मजा शायद ही ले सकें। इससे भी बड़ी मुश्किल है उन तीन लाख लोगों के लिए जिन्होंने इस एयरलाइंस से किसी अगली तारीख के लिए बुकिंग करा रखी है। कंपनी के दिवालिया हो जाने के बाद उन्हें अपना पैसा वापस मिलेगा या नहीं, इसे लेकर कोई कुछ कहने की हालत में नहीं है। बीमा कंपनियां दुर्घटना का, या जहाज लेट होने से संभावित नुकसान का तो बीमा करती हैं लेकिन एयरलाइंस के दिवालिया हो जाने की स्थिति में क्षतिपूर्ति करने की कोई व्यवस्था आमतौर पर उनके पास नहीं होती। इस बारे में ब्रिटेन की सरकार भी मौन है क्योंकि उसके लिए यह देश के मान-प्रतिष्ठा से जुड़ा मसला नहीं है।

एक और समस्या बोइंग और एयरबस जैसी विमान निर्माता कंपनियों की भी है जिनके पास मोनार्क एयरलाइंस की ओर से पचास से ज्यादा जहाजों की खरीद के ऑर्डर पेंडिंग हैं।

निर्माण की अलग-अलग अवस्थाओं में पड़े इन जहाजों का और साथ ही इन्हें बनाने वाली कंपनियों का भी?

कवियों को गोद लेने वाला फांगणे

'अरे संसार संसार जसा/तवा चूल्याहवर/ आधी हाताला चटके तेव्हा मिलते भाकरज' एक मराठी कविता की इन दो पंक्तियों का अर्थ कुछ इस प्रकार है कि यह संसार चूल्हे पर रखे तवे जैसा है, पहले इस तवे से हाथ जलता है फिर खाने को रोटी मिलती है। यह कविता मराठी कवयित्री बहिणाबाई की लिखी है और आज इसकी चर्चा इसलिए हो रही है कि लोकगीत की तरह प्रचलित ये पंक्तियां महाराष्ट्र के थाना जिले के एक गांव फांगणे के एक घर के दरवाज़े पर लिखी गयी हैं। जब यह पता चलता है कि ये पंक्तियां एक अभियान के तहत दरवाज़े पर लिखी गयी हैं तो यह सवाल तो मन में आ ही जाता है कि छोटे-से गांव में यह कैसी बयार चली है? आप जब मुरबाद तहसील के इस गांव में प्रवेश करते हैं तो पहले ही घर के दरवाज़े पर 'नेम प्लेट' जैसी लगी है, जिस पर बहिणाबाई चौधरी का नाम लिखा है। जी नहीं, इस मकान में बहिणाबाई नहीं रहतीं, पहले भी कभी नहीं रहती थीं। गांव वालों ने मिलकर एक तरह से यह मकान बहिणाबाई के नाम कर दिया है। नहीं, बहिणाबाई इस गांव की भी नहीं थी। मराठी की एक कवयित्री का नाम है यह जो जलगांव में रहती थीं। अशिक्षित थीं बहिणाबाई। उनके खेतों में रूई उगती थी और वे कविता रचा करती थीं। सीधी-सादी भाषा में जीवन के गहरे अर्थ समझाने वाली उनकी रचनाएं ग्रामीण क्षेत्रों में लोकगीतों की तरह गायी जाती थीं। अब भी कहीं-कहीं सुनाई दे जाती हैं उनकी रची पंक्तियां। स्कूलों में पढ़ाई भी जाती हैं। फांगणे गांव के बाशिंदों ने बहिणाबाई जैसे इक्यावन कवियों को 'गोद लिया' है। पचास मकान उनके नाम कर दिये हैं। हर मकान के दरवाज़े पर एक मराठी कवि का नाम है। विष्णु शिरवाडकर कुसुमाग्रज, त्र्यंबक थोम्ब्रे बालकवि, माणिक घोडगटे, शांता शेल्के, दिलीप चित्रे, नामदेव, अरुण कोल्हटकर आदि को समर्पित इन मकानों में रहने वाले अपने इन कवियों को सांस्कृतिक-साहित्यिक विरासत की तरह संजोकर रखेंगे। फिलहाल इन मकानों में इन कवियों के चित्र लगाये गये हैं, उनका जीवन-परिचय दिया गया है। धीरे-धीरे इनकी पुस्तकों को इकट्ठा किया जायेगा। उद्देश्य यह है कि इन घरों में, गांव में, रहने वाले बच्चे अपनी भाषा के साहित्यकारों से परिचित हों, साहित्य की उपयोगिता और महत्ता को समझें। गांव वाले अपने गांव को 'काव्य-ग्राम' के रूप में प्रसिद्ध करना चाहते हैं। ज्ञातव्य है कि कुछ ही दिन पहले महाराष्ट्र में ही सतारा जिले के एक गांव भिल्लर को 'पोथी ग्राम' बनाया गया है। इस गांव में पच्चीस स्थानों पर छोटे-छोटे पुस्तकालय, पुस्तकें पढ़ने की जगहें बनायी गयी हैं, जहां गांव वाले, और बाहर के लोग भी निःशुल्क पुस्तकें पढ़ सकेंगे। यह काव्य-ग्राम भी देश में संभवतः पहला उदाहरण है अपनी तरह का। दरअसल साल, भर पहले फांगणे गांव में 'आजीबाईजी शाला' यानी नानी-दादी का स्कूल खोला गया था। बूढ़ी महिलाओं को इस स्कूल में मराठी भाषा सिखायी जाती है, ताकि वे अंगूठा लगाने की विवशता से उबर सकें। यह पहल गांव के ही एक अध्यापक ने की थी। इसी आठ सितंबर को आजीबाई शाला में एक कवि सम्मेलन आयोजित करने की योजना बनी। तभी इक्यावन मकानों को कवियों का नाम देने की कल्पना ने जन्म लिया। शुरुआत सिर्फ नाम देने से हुई पर गांव के युवा अध्यापक, योगेंद्र बांगड़ ने कल्पना को 'काव्य-ग्राम' तक का विस्तार दे दिया। सच पूछा जाये तो कविता लोक-जीवन में रची-बसी है। एक बार रवींद्रनाथ टैगोर को जर्मनी में किसी ने वहां के कविता-प्रेम का उदाहरण दिया था तो गुरुदेव ने कहा था, 'हमारे देश में तो हर ग्रामीण महिला कविता रचती है जब सवेरे-सवेरे वह चक्की पीसने लगती है, उसके होंठों से कविता अपने आप झरने लग जाती है।' चलती चक्की की आवाज़ के साथ जो स्वर उमड़ते हैं वे ज़मीन और जीवन से जुड़ी भावनाओं के स्वर होते हैं और सच्चे और अच्छे साहित्य की पहचान और कसौटी भी यही है। ऐसा ही साहित्य जीवन को रसमय बनाता है, अनुप्राणित करता है। यह रस जीवन की आवश्यकता है और यह प्रेरणा जीवन का पाथेय। इसलिए ज़रूरी है जीवन साहित्य से जुड़े। साहित्य समाज की प्रेरणा ही नहीं होता, उसकी पहचान भी होता है। संगीत और कला के साथ-साथ साहित्य भी ज़रूरी शर्त बतायी गयी है मनुष्य होने की। पता नहीं क्यों हमारे समाज में साहित्य से एक दूरी पसरती जा रही है। अपने साहित्य और साहित्यकारों से जुड़ना अब ज़रूरी नहीं लगता हमें। दुर्भाग्य से, देश में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली हिंदी के साहित्य और समाज के बीच तो जैसे एक विरक्ति का भाव आ गया है। मराठी, बांग्ला, मलयालम आदि भाषाओं की स्थिति बेहतर है। दुर्गा-पूजा के अवसर पर बाकी सामान के साथ पुस्तक या पत्रिका घर लाना सुसंस्कृता बांग्ला परिवार की एक पहचान आज भी बना हुआ है। मराठी समाज तो साहित्य सम्मेलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता है। पुस्तकों की भी 'दिण्डी यात्राएं' निकाली जाती हैं; जिनमें बड़े-बड़े साहित्यकार सिर पर ग्रंथ उठाये यात्रा में हिस्सा लेते हैं। इसी संदर्भ में इंग्लैंड के रोचेस्ट शहर की साहित्यिक परंपराओं को याद करना प्रेरणादायक है। यह शहर चार्ल्स डिकेन्स का है। यहां लोगों को इस बात का गर्व है कि डिकेन्स का साहित्य इसी धरती पर रचा गया। हर साल यहां डिकेन्स की याद में एक साहित्यिक मेला लगता है। मुझे याद है, न्यूयार्क के नेशनल पार्क में एक सुबह मैंने एक मूर्ति पर प्यारा-सा फूल चढ़ा देखा था।

राजनीति के संत की अनदेखी

आज की पीढ़ी के बहुत कम लोग जानते होंगे कि हरियाणा की राजनीति में बंसीलाल, देवीलाल, भजनलाल की त्रिमूर्ति के बाहर कैसे-कैसे दिग्गज हुए हैं। हरियाणा के (1966 में) गठन के बाद यहां महंत श्रेयो नाथ, स्वामी इंद्रवेश और 'संत' हरद्वारीलाल जैसे कुछ भगवाधारी भी हुए हैं। हरियाणा के राजनीति के रंगमंच के एक उत्कृष्ट पात्र बाबू मूलचंद जैन के जीवन, कर्म और सोच के बारे में समीक्षाधीन पुस्तक स्पष्ट करती है कि राजनीति के संत का विशेषण बाबू मूलचंद पर इनमें से कुछ हस्तियों से अधिक जंचता है। आज़ादी की लड़ाई के दौर में गांधी टोपी पहन कर जेल जाने से रोके जाने पर 28 वर्ष के जिस युवा वकील ने सब कपड़े उतार कर सिर्फ कच्छे में जेल जाकर अंग्रेज़ सरकार को यह नियम बदलने को मजबूर किया, आज़ादी के बाद वह लोकसभा सदस्य बना। उसने करनाल जिले (जो अब चार जिलों में बंट चुका है) में कांग्रेस पार्टी को खड़ा करने में अहम भूमिका निभाई और पंजाब के प्रताप सिंह कैरों मंत्रिमंडल में लोक निर्माण मंत्री बना। बाद में वह हरियाणा में राव वीरेंद्र सिंह की संविद सरकार और चौधरी देवीलाल की लोक दल सरकारों में वित्तमंत्री रहे। शांतिपूर्ण प्रतिरोध की सीख मूलचंद ने 22 वर्ष की उम्र में रोहतक के आसौधा गांव में कांग्रेस द्वारा चौधरी छोटूराम के नेतृत्व वाली सत्ताधारी यूनियनिस्ट पार्टी के विरोध में खड़े होकर ली थी। सिद्धांतों के लिए अहिंसक ढंग से संघर्ष की सोच ने उन्हें कैरों मंत्रिमंडल का सदस्य रहने और उसी राजनीतिक दल का सांसद रहते हुए मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों के बेटों की जमीन के मुजारों के हक के लिए लड़ाई लड़ी। बहुत बाद उन्होंने 'लोकराज लोकलाज से चलता है' कहने वाले चौधरी देवीलाल के परिवार प्रेम का विरोध करते हुए लोकदल को छोड़ने का फैसला लिया। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हिम्मत सिंह सिन्हा उन्हें थानेसर की पुरानी सब्ज़ी मंडी में हनुमान मंदिर के जीर्णोद्धार के अवसर पर लेकर गए तो बाबू मूलचंद जैन ने कहा – हनुमान बहुत शक्तिशाली थे, ऐसे ही आप बनो। उन्होंने राम की सेवा की और बदले में कुछ नहीं मांगा, यही गुण आप अपने में लाओ तभी हनुमान जी की सच्ची पूजा होगी। जो हनुमान जी से यह मांगने आए हैं वे हाथ ऊंचा करेंज जब किसी ने हाथ खड़ा नहीं किया तो आशीर्वाद देने से इनकार करते हुए वह मंच से उतरने को बढ़े। मंदिर समिति के नेताओं ने उन्हें रोका और लोगों को सदाचार की प्रतिज्ञा कराने का निवेदन किया। पुस्तक में बाबू मूलचंद जैन के व्यक्तित्व, कार्यों और सोच से जुड़ी ढेरों सामग्री है पर यह सुव्यवस्थित नहीं है। इसलिए यदि यह राजनीति के इस संत के जीवन से न्याय नहीं करती तो इसके लिए प्रकाशक को भी जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

राजनीति के संत की अनदेखी

आज की पीढ़ी के बहुत कम लोग जानते होंगे कि हरियाणा की राजनीति में बंसीलाल, देवीलाल, भजनलाल की त्रिमूर्ति के बाहर कैसे-कैसे दिग्गज हुए हैं। हरियाणा के (1966 में) गठन के बाद यहां महंत श्रेयो नाथ, स्वामी इंद्रवेश और 'संत' हरद्वारीलाल जैसे कुछ भगवाधारी भी हुए हैं। हरियाणा के राजनीति के रंगमंच के एक उत्कृष्ट पात्र बाबू मूलचंद जैन के जीवन, कर्म और सोच के बारे में समीक्षाधीन पुस्तक स्पष्ट करती है कि राजनीति के संत का विशेषण बाबू मूलचंद पर इनमें से कुछ हस्तियों से अधिक जंचता है। आज़ादी की लड़ाई के दौर में गांधी टोपी पहन कर जेल जाने से रोके जाने पर 28 वर्ष के जिस युवा वकील ने सब कपड़े उतार कर सिर्फ कच्छे में जेल जाकर अंग्रेज़ सरकार को यह नियम बदलने को मजबूर किया, आज़ादी के बाद वह लोकसभा सदस्य बना।

जटिल समस्या पर सार्थक संदेश

उपन्यास 'वे अठारह दिन' के माध्यम से उपन्यासकार अमृतलाल मदान ने पोर्न नाम की बीमारी की नकारात्मक कुत्सित प्रवृत्तियों और सकारात्मक सोद्देश्यपूर्ण आदर्शों के बीच सतत चल रही लड़ाई को चित्रित किया है। महाभारत के अठारह दिन के युद्ध की तरह यह द्वंद्व अठारह दिन समरजीत के मन में चलता है। अनैतिक सेक्स भावना व पवित्र-प्रेम भावना की दो धुरियों के बीच इस उपन्यास के मुख्य पात्र समरजीत व गायत्री पिसते रहते हैं। कोचिंग सेंटर में बेसिक फंक्शनिंग सीखने गए समरजीत को वोहरा कोचिंग के लिए गायत्री के पास भेजते हैं, जहां चपड़ासी जगदीप उन दोनों की गतिविधियों पर सीसीटीवी कैमरे की तरह नजरें जमाए रहता है। समरजीत गायत्री को देखकर अपने पुराने, दबे प्रेम को याद करते हैं। एक वो उम्र थी–एक ये उम्र है। समरजीत साहित्यकार हैं। कंप्यूटर के, आईपैड के की-बोर्ड पर उंगलियों का स्पर्श और निकट बैठने से, स्क्रीन पर देखने से और निकटता समरजीत और गायत्री के बीच कभी चुपके से गायत्री के पांव छूकर मां को ढूंढ़ते हैं तो कभी पूर्व प्रेमिका सीमा को याद कर लेते हैं। उपन्यास आगे बढ़ता है समरजीत और गायत्री के बीच फेसबुक फ्रेंडशिप का। समरजीत की पत्नी राधा के संदेह का। गायत्री ही शुरुआत करती है फेसबुक रिक्वेस्ट भेजकर। गायत्री लिखती है कि मैं तो बस इतना चाहती हूं कि हम फ्रेंड्स बनकर रहें, केवल मित्र और कुछ नहीं। इस तरह यह फ्रेंडशिप एक द्वंद्व को जन्म देती है समरजीत के मन में। वे उसे 'बेटी' कहते हैं, मन में कुछ और चलता रहता है।

क्यों न शुरु हो बात

जम्मू-कश्मीर से लगने वाली सीमा पर पिछले एक साल से भी ज्यादा समय से कुछ-कुछ अंतर पर लगातार गोलीबारी जारी है। कभी उधर से घुसपैठ होती है तो कभी गोली चलती है, फिर हम उसका जवाब देते हैं। लोग दोनों तरफ मारे जा रहे हैं और घायल हो रहे हैं। इससे पाकिस्तान की सीमा से सटे भारतीय गांवों का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। सिर्फ अरनिया और आरएसपुरा सेक्टरों में अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास की बस्तियों से 20,000 से अधिक लोगों को घर-बार छोड़ कर कहीं और जाना पड़ा है। किसान परेशान हैं क्योंकि इससे बुवाई-कटाई के काम पर गहरा असर पड़ा है। धान की कटाई के दिनों में पाकिस्तान ने गोलाबारी कर किसानों के लिए मुश्किल पैदा कर दी थी। वही कि स्सा आज भी दोहराया जा रहा है। इस बार यह डर भी है कि रबी की बुवाई बर्बाद करने के लिए पाकिस्तान गोलीबारी बढ़ा सकता है। किसानों का कहना है कि खेतों के सामने अगर बांध होता तो सीमा पर खेती करना इतना मुश्किल न होता। पाकिस्तान ने अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखकर बॉर्डर के पास के इलाकों में ऊंचा बांध बना लिया, जिसकी आड़ से पाक रेंजर्स भारतीय चौकियों और किसानों पर गोलियां बरसा रहे हैं। ज्यादातर भारतीय चौकियां, बैरकें और बंकर खुले मैदान में हैं। सीमावर्ती इलाकों से बहुत दूर राजधानी के सुरक्षित माहौल में बैठे रक्षा विशेषज्ञ, राजनेता और टीवी ऐंकर एक बार फिर सर्जिकल स्ट्राइक करने की बात कर रहे हैं। उन्हें न तो सरहदी इलाकों के लोगों की तकलीफों का अहसास है, न ही सीमा पर तैनात सैनिकों का दर्द वे समझना चाहते हैं। वे यह भी नहीं देखना चाहते कि अगर इसी तरह छाया युद्ध चलता रहा तो हमारी सेना में भारी हताशा आ सकती है। खुद सेना कश्मीर समस्या के राजनीतिक समाधान के पक्ष में है। श्रीनगर स्थित सेना की उत्तरी कमान के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल डीएस हुड्डा ने कहा था कि कश्मीर का मसला कानून-व्यवस्था का नहीं, बल्कि राजनीतिक मसला है और इसका समाधान राजनीतिक पहलकदमी से ही होना है।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं
1. आय व्यय का लेखा–जोखा, गणित, एकाउंट 3. विनती, अदब 6. दृष्टांत, सुपुर्दगी, उदाहरण 7. मूल्यवान, बहुमूल्य 8. अच्छे ढंग में गाया जाने वाला सुंदर गीत 10. बराबर, सम 12. मुख, चेहरा 14. अनुकृति, अनुकरण, असल का विलोम 17. दिमाग, मस्तिष्क 18. मनोहर, सुंदर, इच्छित, प्यारा 19. गर्मी, ताप 21. रसिया, प्रेमी, रसपान करने वाला 23. दबाव, भार 24. भीख 25. काम से जी चुराने वाला, आलसी।

ऊपर से नीचे
1. साहस, वीरता, बहादुरी 2. बहिन, प्रवाहित होना 3. प्रणय क्रीडा, सुखोपभोग, हावभाव 4. विश्वास, प्रतीति 5. इंतजार 9. खाने–पीने का सामान, रसद 11. नशीला, मदभरा 12. घायल, जख्मी 13. झुकना, प्रणाम, नमस्कार 14. दृष्टि, निगाह 15. तीव्रइच्छा 16. अर्थ, अभिप्राय, स्वार्थ 20. इम्तिहान, योग्यता आदि को परखना 22. जुल्म, अन्याय 23. पत्नी, बीवी, एक प्रत्यय।

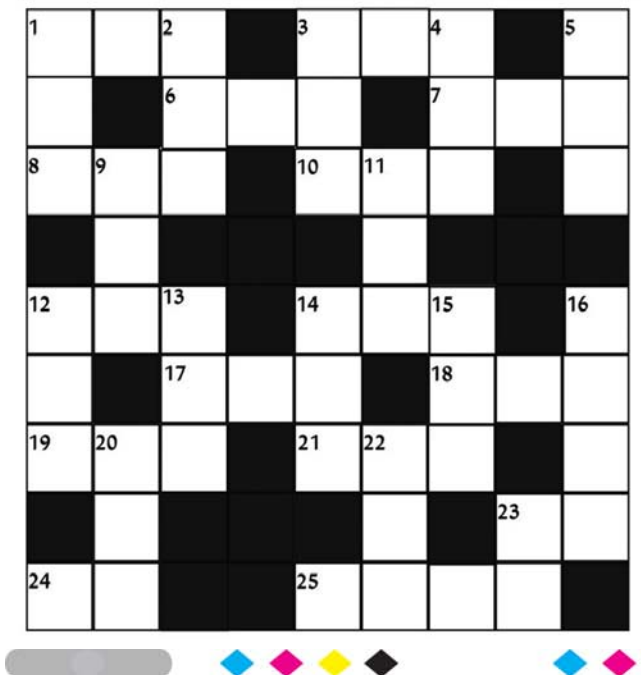

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 91 का हल

दा	ढ़ी		की		खा	सो	आ	म
वा		त	म	न्ना			जा	
न	जा	क	त		बा	अ	द	ब
ल		ली		वि	ला	प		हा
	अ	फ	सा	ना		मा	हि	र
दा	ब			श	गु	न		
न		उ	प	का	र		शि	
व		त्स		र		त	क	ला
	सा	व	न		गु	रु	वा	र

सू-दोकू

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.91 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

राशिफल

मेष - अनायास लाभ प्राप्ति की संभावना बन सकती है, इसलिए रिस्क लेने की कोशिश कर सकते हैं। सलाह है कि अपने लक्ष्य को लेकर गंभीरता दिखाएं।

वृष- मनोनुकूल खर्च का वातावरण तैयार होगा, इसलिए शापिंग करके सुख मिलेगा, किसी बाहरी व्यक्ति या बाहरी स्थान से लाभ हो सकता है।

मिथुन- आपको केवल अपनी समस्याओं पर ही ध्यान देना होगा, दूसरों की समस्याओं में पड़ने से हानि हो सकती है।

कर्क- कार्यक्षेत्र में विपरीत स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। उत्तरार्ध में कुछ सुधार होगा और आप राहत की सांस ले पाएंगे।

सिंह- शुरुआत में पारिवारिक सदस्यों से मतभेद और विवाद बढ़ेगा। धन व्यय और लाभ में कमी होने के कारण मानसिक अशांति होगी।

कन्या- जीवनसाथी से मतभेद हो सकता है। वाहन चलाने में सावधानी रखें। धार्मिक कार्यों में रुचि बनाए रखें।

तुला- आपकी किसी लापरवाही या गलती की वजह से परिवार में अशांति बढ़ सकती है। घर के बड़े बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

वृश्चिक- स्वास्थ्य हानि व शारीरिक पीड़ा से ग्रस्त हो सकते हैं। स्थान परिवर्तन का योग है। धन खर्च और मानसिक उद्वेग हो सकते हैं।

धनु- यह माह मिश्रित फलदायी रहेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को सहजता से पर्याप्त आमदनी होती रहेगी। व्यापारिक कारणों से यात्रा करनी पड़ सकती है।

मकर- भवन या भूमि की खरीददारी के लिए समय अच्छा है। उत्तरार्ध में खर्चे बढ़ेंगे और विरोधी पक्ष आपको परेशान कर सकता है।

कुंभ- आपकी परिस्थितियों में तेजी से बदलाव शुरू होगा। ऐसा लगेगा मानो सब कुछ आपके विरूद्ध हो। मानसिक तनाव बढ़ सकता है।

मीन- दूसरों के मामले में में ज्यादा दखल न दें अन्यथा मान हानि तथा अन्य परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।